



संपादक की कलम से.....

गीता शर्मा

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ भाषा, वेशभूषा, परंपराएँ और संस्कृतियाँ भले ही अलग-अलग हों, परंतु इन सबको जोड़ने वाला सबसे सुंदर सूत्र हमारे त्यौहार हैं। सच कहा जाए तो भारत की आत्मा उसके त्यौहारों में बसती है। ये पर्व केवल आनंद और उत्सव के अवसर नहीं होते, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक एकता और मानवीय संबंधों के प्रतीक भी होते हैं।

भारतीय जीवन में वर्ष का लगभग हर महीना किसी न किसी त्यौहार की रंगीन छटा से सुसज्जित रहता है। होली के रंग, दीपावली की ज्योति, रक्षाबंधन का स्नेह, ईद की मिठास, क्रिसमस की खुशियाँ और नवरात्रि की श्रद्धा—ये सभी पर्व भारत की बहुरंगी संस्कृति को अभिव्यक्त करते हैं। इन अवसरों पर लोग अपने भेद-भाव भुलाकर एक साथ हँसते-गाते हैं और मिलकर खुशियाँ बाँटते हैं। यही भावना भारत की सामाजिक एकता और सहिष्णुता को मजबूत करती है।

त्यौहारों का महत्व केवल धार्मिक या सांस्कृतिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। व्यस्त जीवन के बीच ये अवसर हमें अपने परिवार और समाज से जुड़ने का अवसर देते हैं। घर-आँगन की सजावट, पारंपरिक पकवान, पूजा-अर्चना और मेल-मिलाप—ये सब मिलकर जीवन में उल्लास और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं।

इसके साथ ही त्यौहारों का आर्थिक और सांस्कृतिक

महत्व भी कम नहीं है। पर्वों के अवसर पर बाजारों में रौनक बढ़ती है, हस्तशिल्प और स्थानीय उत्पादों की प्रोत्साहन मिलता है और अनेक लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार त्यौहार समाज के आर्थिक जीवन को भी गतिशील बनाते हैं।

हालाँकि बदलते समय के साथ त्यौहार मनाने के तरीके में भी परिवर्तन आया है। आधुनिकता और व्यस्त जीवनशैली के कारण कई बार त्यौहारों की मूल भावना पीछे छूटती दिखाई देती है। ऐसे में यह आवश्यक है कि हम इन पर्वों के वास्तविक संदेश—प्रेम, सद्भाव, सहयोग और मानवता—को समझें और उसे अपने जीवन में उतारें।

अंततः कहा जा सकता है कि भारत के त्यौहार केवल परंपराएँ नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक जीवन का उत्सव हैं। ये हमें यह सिखाते हैं कि विविधताओं के बावजूद हम एक हैं। इसलिए यदि भारत की आत्मा को समझना हो, तो उसके त्यौहारों की ओर देखना ही पर्याप्त है—क्योंकि सचमुच, भारत अपने त्यौहारों में ही बसता है।